APRIL 2013 TO MARCH 2014

दैनिक भास्कर — भिलाई-राजनांदगांव मंगलवार, 11 जून

नए किस्मों के चयन से बढ़ेगा उत्पादन

वैज्ञानिक सलाहकार समिति की हुई बैठक

सोमवार, 10 जून 2013 — हरिभूमि

बैठक में कृषि वैज्ञानिकों ने कृषकों को दिए सुझाव

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

सर्वाधिक क्षेत्र में की जाती है अतः

कड़ी का काम करेंगे कृषक संगवारी

नगर संवाददाता

...में कृषि विज्ञान केंद्र की गतिविधियां बताई गई.

वीएस परिहार उपस्थित थे. प्रशिक्षण के अंत में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. टीडी साहू ने प्रशिक्षित कृषक उन्नत तकनीकी की जानकारी अपने-अपने गांव अथवा कार्यक्षेत्र में किसानों को देकर कड़ी का काम करने की बात कही.

दैनिक भास्कर

किसानों को दी जानकारी

---

18 जुलाई — कवर्धा जिला | हरिभूमि

विज्ञान केन्द्र में संगवारी प्रशिक्षण आयोजित

हरिभूमि न्यूज. कवर्धा

कृषि संगवारी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन 11 एवं 12 जुलाई को रखा गया। जिसमें कबीरधाम जिले से कुल 53 कृषकों ने भाग लिया।

प्रशिक्षण में केन्द्र के प्रमुख डॉ. टीडी साहू द्वारा किसानों को कृषि विज्ञान केन्द्र की गतिविधियों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। केन्द्र में पदस्थ वैज्ञानिक डॉ. बीपी त्रिपाठी पौध रोग विशेषज्ञ द्वारा सोयाबीन फसल में लगने वाली प्रमुख ...

समन्वित प्रबंध के बारे में विस्तृत रूप से बताया गया। डॉ. टीडी साहू ने कृषकों को धान एवं सोयाबीन में उर्वरता संबंधी जानकारी दी। डॉ. एसके उपाध्याय ने कृषकों को धान में नींदा नियंत्रण, सोयाबीन नींदा नियंत्रण संबंधित जानकारी दी। श्रीमती सुलोचना भुईया द्वारा मिश्रित खेती के बार में बताया गया। श्रीमती प्रमिला कांत द्वारा सब्जी उत्पादन के बारे में जानकारी दी। प्रशिक्षण के अंत में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. टीडी साहू ने बताया कि प्रशिक्षित कृषक उन्नत ...

कवर्धा — भिलाई-राजनांदगांव शनिवार.

किसानों ने ली ट्रेनिंग

कवर्धा। कृषि विज्ञान केंद्र ने शासकीय महाविद्यालय परिसर में कृषक प्रशिक्षण शिविर लगाया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. टीडी साहू ने प्रशिक्षणार्थियों को दलहनी ...

भिलाई-राजनांदगांव रविवार, 8 दिसंबर, 2013 - 20

पौधरोग विशेषज्ञ ने किसानों को रोगों के प्रति जागरूक किया

पौधरोग विशेषज्ञों से चने में रोग की कृषकों ने जानकारी ली।

भास्कर न्यूज.कवर्धा

नगर के कृषि विज्ञान केन्द्र में पदस्थ पौध रोग विशेषज्ञ ने कृषक संगोष्ठी एवं सामूहिक चर्चा के द्वारा कृषकों को चने में रोगों के प्रति जागरूक किया।

पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बीपी त्रिपाठी ने कहा कि इस समय रबी फसल की बोनी जोरो पर है, जिसमें मुख्य फसल चना है। उन्होंने बताया कि जिले में करीब अस्सी हजार हेक्टेयर में चने की खेती की जाती है। अधिकांश चने की फसल में उकठा, कालर रॉट, ड्राई रूट रॉट की समस्या बुआई के बाद से शुरू होती है, जिससे कटाई तक पौधे रोगों का शिकार होते रहता है। फसल रोग ग्रस्त होने से चने के उत्पादन पर असर होता है। उन्होंने किसानों से कहा कि कृषकों को चने की बुआई से ही समन्वित प्रबंध पर ध्यान देना चाहिए, जिससे चने की फसल को बीमारियों से निजात मिलेगी। उन्होंने कहा कि कृषक एक ही खेत

में बार-बार चने ... कृषक फसल ... तहत गेहूं व गन्ना ... की फसल ले सक... ने कहा कि कृष... पूर्व बीजोपचार, ... मैन्कोजेब 2-3 ... बीज की दर से ...

बीजोपचार ... अंकुरण प्रतिश... तथा रोग से ल... वृद्धि एवं स्वास्थ... भी बढ़ेगी। सा... विरिडी जैव फ... प्रति किलो बीज... करना चाहिए। ... कृषक बीज उप... किलो ट्राइकोड... 100 किलो सड़... साथ मिलाकर ... में बुआई के ब... करें। कृषक उन्न... जेजी 74 जाकी... विशाल जेजी ... का चयन करें।

चने को रोगों से बचाने उपाय बताये

नगर संवाददाता

कवर्धा. कृषि विज्ञान केन्द्र में पदस्थ पौध रोग विशेषज्ञ डॉ. बी.पी. त्रिपाठी ने बताया कि, इस समय रबी फसल की बोनी जोरो पर है, जिसमें मुख्य फसल चना है. अतः चना बुआई से पूर्व कृषकों को क्या-क्या सावधानियां रखनी चाहिए, जिससे बीमारी की समस्या कम से कम हो. डॉ. त्रिपाठी ने विभिन्न कृषक संगोष्ठी, सामूहिक चर्चा के जरिये कृषकों को चने की बीमारी के प्रति जागरूक होने की सलाह दी. जिले में लगभग अस्सी हजार हेक्टेयर में चने की खेती की जाती है परंतु बहुतायात मात्रा में चने में उकठा, कालर रॉट, ड्राई रूट रॉट की समस्या चने की बुआई के बाद से शुरू होती है और कटाई तक पौधे रोगों का शिकार होते रहते हैं. इसके लिए सबसे पहले किसानों को एक ही खेत मे बार-बार चने की फसल को नहीं लेना और उस क्षेत्र मे जहां पर गेहू, गन्ना जैसी फसले ली जा रही है तो चने के बदले गन्ना, गेहू फसल चक्र परिवर्तन के तहत ले सकते हैं और चना बुआई के पूर्व बीजोपचार, कार्बेन्डाजिम एवं मैन्कोजेब 2-3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें, बीजोपचार से सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि बीज का अंकुरण प्रतिशत ठीक होगा रोग से लड़ने की क्षमता में वृद्धि होगा. किसानो को बीज उपचार के साथ साथ ट्राइकोडर्मा का उपयोग 5 किलाग्राम 100 किलो सड़ी गोबर खाद के साथ मिलाकर उपयोग कर सकते है खेतो मे बुआई के बाद हल्की सिंचाई करें. बीज दर 10 प्रतिशत बढ़ाकर उपयोग करें. उपरोक्त विधियां अपनाकर चने की बिमारी कम कर उत्पादन को बढ़ाया जा सकता है.

डायबिटीज

के मरीजों के पावों की प्लास्टिक सर्जरी (स्कीन ग्राफ्टिंग) की विशेष सुविधा.

कालड़ा प्लास्टिक कॉस्मेटिक सर्जरी एवं बर्न सेंटर

डॉ. सुनील कालड़ा (प्लास्टिक

डॉ. नीलम कालड़ा सर्जन)

रायपुर 9827143060